



અભીરે અણે સુખત "શોહરત કી ખ્વાહિશ" કી લિખત "અભીરણે રમુલ કી 130 દિવસલ મલ અણે અણે કી લિખત" લે લિખે ઝણે અણે કી અભી લિખત

Shohrat Ki Khwahish (Gujarati)

શોહરત કી ખ્વાહિશ

જુલ તરખત 29



શોહરત કી ખ્વાહિશ અભીરે અણે સુખત. અભીરે અણે અણે. હરત અણે અણે અણે અણે અણે અણે અણે

મુહમ્મદ ઇબ્રાહમ અતાર કાદિરી રાખી



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढने की दुआ

अज: शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरत अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि रजवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ

पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह खैरुज्जल्लालु अहमदुलक़राम ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर

अपनी रहमत नाज़िल करमा ! ओ अज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المستطرف ج ۱ ص ۱۰۰ : زاد الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आपिर अक अक बार दुरुद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मजिदरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



शोहरत की ज्वाहिरा

येह रिसाला (शोहरत की ज्वाहिरा)

शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हजरत

अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि रजवी ज़ियाई

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने तर्हू ज़बान में तहरीर करमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को गुजराती

रस्मुल भत में तरतीब दे कर पेश किया है और मकतबतुल मदीना से शाअेअ

करवाया है. इस में अगर किसी जगह कमी भेशी पाओं तो मजलिसे तराजिम

को (ब जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ करमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मकतबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद - 1 गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعُدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

यह मजमून “आशिकाने रसूल की 130 हिकायात” के सफ़हा 105 ता 133 से लिया गया है.

शोहरत की ज्वाहिर

दुआमे अन्तार

मौलाअे करीम ! जो कोई रिसाला “शोहरत की ज्वाहिर” के 29 सफ़हात पढ या सुन ले, उस के हिल से शोहरत की ज्वाहिर निकाल कर उसे पुवूस व आज़िज़ी को पैकर बना दे और सद्दा के उस से राज़ी हो जा. آمين

अजुब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिस्त

حَسْبُكَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ مُرْتَفِعٌ

झरमाते हैं : “मैं ने अहुत से उज किये और उन में से अकसर सफ़रे उज किसी किरम का ज़ादे राह लिये बिगैर किये. झर मुज पर आशकार (या'नी ज़ाहिर) हुवा के येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूंके अक मर्तबा मेरी मां ने मुजे पानी का घडा त्बर कर लाने का हुकम दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का हुकम गिरां (या'नी बोज़) गुज़रा, युनान्ये मैं ने समज लिया के सफ़रे उज में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़कत इकत अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुजे धोके में रबा क्यूंके अगर मेरा नफ़्स इना हो युका छोता तो आज अक उकके शरई पूरा करना (या'नी मां की इताअत करना) ईसे (या'नी नफ़्स को) बेहद दुश्वार क्यूं महसूस छोता !”

(الرسالة القشيرية، ص 135)

हुब्बे जाह की लज्जत घबाहत की मशक्कत आसान कर देती है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हमारे

बुलुगाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِينِ कैसी मदनी सोय रपते और किस कदर आज़िजी के पूगर होते हैं. बा'जों की आहत होती है, के वोह आम लोगों से तो रुक रुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन, भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का रवय्या जारिखाना, गैर अप्लाकी और बसा अवकात सप्त हिल आजार होता है. क्यूं ? इस लिये के अवाम में उम्दा अप्लाक का मुजाहरा मकबूलिय्यते आम्मा का भाईस बनता है जब के घर में हुस्ने सुलूक करने से ईज्जतो शोहरत मिलने की पास उम्मीद नहीं होती ! इस लिये येह लोग अवाम में भूब भीठे भीठे बने रहते हैं ! इसी तरह जो ईस्लामी भाई बा'ज मुस्ताहब कामों के लिये बढ यढ कर कुरबानियां पेश करते मगर इराईज व वाजिभात की अदाअेगी में कोताहियां बरतते हैं मसलन मां बाप की ईताअत, बाल बच्चों की शरीअत के मुताबिक तरबियत और फुद अपने लिये इर्ज उलूम के हुसूल में गइलत से काम लेते हैं उन के लिये भी इस डिकायत में ईअ्रत के निहायत अहम मदनी इल हैं. हकीकत येह है के जिन नेक कामों में “शोहरत मिलती और वाह वाह ! होती है” वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सर अन्जाम पा जाते हैं क्यूंके हुब्बे जाह (या'नी शोहरत व ईज्जत की याहत) के सबब मिलने वाली लज्जत बडी से बडी मशक्कत आसान

कर देती है. याद रखिये ! “हुब्बे ज़ाह” में उलाकत ही उलाकत है. ईब्रत के लिये दो इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुलाहज़ा हों : ﴿1﴾ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ताअत (या'नी ईबादत) को बन्दों की तरफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की मહब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जायें. (1067 حدیث 223 ص 1 فردوس الاخبار ج 1) ﴿2﴾ दो लूके लेडिये बकरियों के रेवड में ईतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही हुब्बे माल व ज़ाह (या'नी मालो दौलत और ईज़्ज़त व शोहरत की मહब्बत) मुसल्मान के दीन में मचाती है. (ترمذی ج 4 ص 166 حدیث 2383)

हुब्बे ज़ाह के मुताखल्लिक अहम तरीन मदनी झूल

“हुब्बे ज़ाह” के तअद्लुक से अेहयाउल उलूम की जिल्द 3 सफ़हा 616 ता 617 को सामने रख कर कुछ मदनी झूल पेशे षिदमत हूँ : “(हुब्बे ज़ाह व खिरा) नफ़स को उलाक करने वाले आबिरी उमूर और आतिनी मको इरेब से है, इस में उलमा, ईबादत गुज़ार और आबिरत की मन्ज़िल तै करने वाले लोग मुब्तला किये जाते हूँ, इस तरह, के येह उज़रात बसा अवकात पूब कोशिशें कर के ईबादात बजा लाने, नफ़सानी ज्वाहिरशात पर काबू पाने बटके शुबुहात से भी खुद को बयाने में काम्याब हो जाते हूँ, अपने आ'ज़ा को ज़ाहिरि गुनाहों से भी बचा लेते हूँ मगर अवाम के सामने अपने नेक कामों, दीनी कारनामों और नेकी की दा'वत आम करने के लिये की जाने वाली काविशों जैसे के मैं ने येह किया, वोह किया, वहां बयान था, यहां बयान है, बयानात (करने या ना'त पढने) के लिये ईतनी ईतनी तारीफें “बुक” हूँ, मदनी मशवरे में रात ईतने बज गये और

आराम न मिलने की थकन है इसी लिये आवाज बैठी हुई है। मदनी काङ्किले में सफ़र है, धतने धतने मदनी काङ्किलों में या मदनी कामों के लिये झुलां झुलां शहरों, मुल्कों का सफ़र कर युका हूं वगैरा वगैरा के धजहार के जरीअे अपने नफ़स की राहत के तलब गार छोते हैं, अपना धल्मो अमल जाहिर कर के मज्लूक के यहां मकबूलिय्यत और धन की तरफ़ से होने वाली अपनी ता'जीमो तौकीर, वाह वाह और धज्जत की लज्जत हासिल करते हैं, जब मकबूलिय्यत व शोहरत मिलने लगती है तो उस का नफ़स याहता है के धल्मो अमल लोगों पर जियादा से जियादा जाहिर होना चाहिये ताके और भी धज्जत बढ़े लिहाजा वोह अपनी नेकियों, धल्मी सलाहिय्यतों के तअल्लुक से मज्लूक की धत्तिलाअ के मजीद रास्ते तलाश करता है और **ખાલિક** کے جانने पर, के मेरा रब **رَبِّكَ** मेरे आ'माल से बा ખबर है और मुझे अज धेने वाला है कनाअत नहीं करता बल्के धस बात पर ખुश छोता है के लोग धस की वाह वाह और ता'रीफ़ करें और **ખાલિક** की तरफ़ से हासिल होने वाली ता'रीफ़ पर कनाअत नहीं करता, नफ़स येह बात बखूबी जानता है के लोगों को जब धस बात का धल्म होगा के झुलां बन्दा नफ़सानी ज्वाहिरात का तारिक है, शुबुहात से बयता है, राहे ખુदा में ખूब पैसे ખर्य करता है, धबादात में सप्त मशक़त बरदाशत करता है ખौड़े ખुदा और धशके मुस्तफ़ा में ખूब आहो जारी करता और आंसू बहाता है, मदनी कामों की ખूब धूमें मयाता है, लोगों की धस्लाह के लिये बहुत दिल् जलाता है, ખूब मदनी काङ्किलों में सफ़र करता कराता है, जभान, आंખ और पेट का कुंले मदीना लगाता है, रोजाना ईजाने सुन्नत के

ઈતને ઈતને દર્સ દેતા હૈ, મદ્રસતુલ મદીના (બાલિગાન), સદાએ મદીના, અલાકાઈ દૌરા બરાએ નેકી કી દા'વત કા બડા હી પાબન્દ હૈ તો ઉન (લોગોં) કી ઝાબાનોં પર ઈસ (બન્દે) કી ખૂબ તા'રીફ જારી હોગી, વોહ ઈસે ઈઝ્ઝતો એહતિરામ કી નિગાહ સે દેખેંગે, ઈસ કી મુલાકાત ઔર ઝિયારત કો અપને લિયે બાઈસે સઆદત ઔર સરમાયએ આખિરત સમઝેંગે, હુસૂલે બરકત કે લિયે મકાન યા દુકાન પર "દો કદમ" રખને ચલ કર દુઆ ફરમા દેને, ચાય પીને, દા'વતે તઆમ કબૂલ કરને કી નિહાયત લજાજત કે સાથ દરપ્વાસ્તે કરેંગે, ઈસ કી રાય પર ચલને મેં દો જહાં કી ભલાઈ તસવ્વુર કરેંગે, ઈસે જહાં દેખેંગે ખિદમત કરેંગે ઔર સલામ પેશ કરેંગે ઈસ કા ઝૂટા ખાને પીને કી હિર્સ કરેંગે, ઈસ કા તોહફા યા ઈસ કે હાથ સે મસ કી હુઈ ચીઝ પાને મેં એક દૂસરે પર સબ્કત કરેંગે, ઈસ કી દી હુઈ ચીઝ ચૂમેંગે, ઈસ કે હાથ પાઉં કે બોસે લેંગે, એહતિરામન "હઝરત ! હુઝૂર ! યા સચ્ચિદી !" વગૈરા અલકાબ કે સાથ ખાશિઆના અન્દાઝ ઔર આહિસ્તા આવાઝ મેં બાત કરેંગે, હાથ જોડ કર સર ઝુકા કર દુઆઓં કી ઈત્તિજાએ કરેંગે, મજાલિસ મેં ઈસ કી આમદ પર તા'ઝીમન ખડે હો જાએંગે, ઈસે અદબ કી જગહ બિહાએંગે, ઈસ કે આગે હાથ બાંધ કર ખડે હોંગે, ઈસ સે પહલે ખાના શુરૂઅ નહીં કરેંગે, આજિઝાના અન્દાઝ મેં તોહફે ઔર નઝરાને પેશ કરેંગે. તવાઝોઅ કરતે હુએ ઈસ કે સામને અપને આપ કો છોટા (મસલન ખાદિમ વ ગુલામ) ઝાહિર કરેંગે, ખરીદો ફરોપ્ત ઔર મુઆમલાત મેં ઈસ સે મુરવ્વત બરતેંગે, ઈસ કો ચીઝેં ઉમ્દા ક્વાલિટી કી ઔર વોહ ભી સસ્તી યા મુફ્ત દેંગે. ઈસ કે કામોં મેં ઈસ કી ઈઝ્ઝત કરતે હુએ ઝુક જાએંગે. લોગોં કે

ईस तरह के अकीदत तरे अन्दाज से नईस को बहुत जियादा लज्जत हासिल होती है और येह वोह लज्जत है जो तमाम ज्वाहिरात पर गाबिब है, ईस तरह की अकीदत मन्दिओं की लज्जतों के सबब गुनाहों का छोडना उसे मा'मूली बात मा'लूम होती है क्यूंके "हुब्बे ज़ह" के मरीज को नईस गुनाह करवाने के बजाये उलटा समजाता है के देष गुनाह करेगा तो अकीदत मन्द आंभें डैर लेंगे ! लिहाजा नईस के तआवुन से मो'तकिदीन में अपना वकार बर करार रखने के जजबे के सबब ईबादत पर ईस्तिकामत की शिदत उस को नरमी व आसानी महसूस होती है क्यूंके वोह बातिनी तौर पर लज्जतों की लज्जत और तमाम शह्वतों (या'नी ज्वाहिरात) से बडी शह्वत (या'नी अवाम की अकीदत से हासिल होने वाली लज्जत) का ईदराक (या'नी पहचान) कर लेता है, वोह ईस ખुश इल्मी में पड जाता है के मेरी जिन्दगी अल्वाह तआला के लिये और उस की मरजी के मुताबिक गुजर रही है, हावांके उस की जिन्दगी उस पोशीदा (हुब्बे ज़ह या'नी अपनी वाह वाह याहने वाली छुपी) ज्वाहिर के तहत गुजरती है जिस के ईदराक (या'नी समजने) से निहायत मजबूत अकलें भी आजिज व बेबस हैं, वोह ईबादते ખुदावन्दी में अपने आप को मुख्लिस और ખुद को अल्वाह तआला के महारिम (हराम कर्दा मुआमलात) से ईजतिनाब (या'नी परहेज) करने वाला समज बैठता है ! हावां के ऐसा नहीं, बल्के वोह तो बन्दों के सामने जैबो जीनत और तसन्नोअ (या'नी बनावट) के जरीये ખूब लज्जतें पा रहा है, उसे जो ईज्जत व शोहरत मिल रही है उस पर बडा ખुश है. ईस तरह ईबादतों और नेक

कामों का सवाब ज़ायेज हो जाता है और उस का नाम मुनाफ़िकों की ईडरिस्त में लिखा जाता है और वोह नादान येह समज रहता होता है के उसे अल्वाह **عَلَىٰ مُحَمَّدٍ** का कुर्ब हासिल है !

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो

कर ईज्वास ऐसा अता या ईलाही

(वसाईले बज्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَى مُحَمَّدٍ

अपने मुंह मिया मिहू बनने वाले

हाजियों के लिये मदनी झूल

बा'ज मालदार बार बार हज व उम्रह को जाते, इस की गिनती पूरा याद रखते, बारहा बिगैर जरूरत बे पूछे लोगों को अपने हज व उम्रह की ता'दाद बताते और सफ़रे मदीना के “कारनामे” सुनाते हैं, इन को अहसास तक नहीं होता के कहीं रियाकारी की तबाहकारी में न जा पड़ें. **हतीम** शरीफ़ का दाबिला भी हालांके ऐन का'बजे मुशर्रफ़ा ही का दाबिला है जो हर अक को नसीब हो सकता है मगर इस का तजकिरा कोई नहीं करता और अगर किसी को दरवाजजे का'बा के अन्दर दाबिला या किसी मुल्क के सर बराह के साथ सुनहरी जालियों के अन्दर लाजिरी की सआदत मिल जाये तो अपने मुंह से अपने झजाईल बयान करते नहीं थकता. इसी तरह बा'ज लोग अपने झजाईल इस तरह बयान करते भी सुनाई देते हैं के साहिब ! वहां तो हम ने जो मांग्गा वोह मिला, हर तमन्ना पूरी हुई, हुलां की मुलाकात की ज्वाहिर हुई थोड़ी ही देर में मिल गये वगैरा. इस तरह अपने मुंह “मियां मिहू”

बन कर येह लोग समजते होंगे के हमारा वकार बुलन्द होगा
 हावांके ऐसा होना ज़रूरी नहीं, हो सकता है बा'ज लोग इस
 का मतलब येह भी लेते हों, के “येह हाजि साहिब” मकामाते
 मुकद्दसा की अजमत के बयान के साथ साथ अपनी “करामत”
 भी सुना रहे हें ! हां बतौरे तद्दीसे ने'मत या दूसरों को
 रजबत दिलाने की निख्यत से अपने ओपर होने वाले इन्आमाते
 ईलाहिय्यह के तजकिरे में हरज नहीं. बहर हाव हर अेक को
 अपनी निख्यत पर गौर कर लेना ज़रूरी है के मैं कुवां बात क्यूं
 कलने लगा हूं. अगर बताने में आभिरत की तलाई का पडलू है तो
 बोले वरना युप रहे. **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है :
 “**जो अद्लाह उक्ल और डियामत पर इमान रभता है उसे याहिये के**
तलाई की बात करे या षामोश रहे.” (بخاری ج ٤ ص ١٠٥ حديث ١٠١٨)

क्या अपने हज व उम्रह की ता'दाद बयान करना गुनाह है ?

अपने उज व उम्रे की ता'दाद बयान करना हर सूरत
 में गुनाह नहीं, हदीसे पाक में है : **إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ**
 या'नी आ'माल का दारोमदार निख्यतीं पर है. (بخاری ج ١ ص ١٠١ حديث ١٠١٨) अगर
 कोई तद्दीसे ने'मत (या'नी अपने ओपर ने'मते ईलाही की ખबर
 देने) के लिये अपने उज की ता'दाद बयान करे तो हरज नहीं
 मगर ईल्मे दीन और सोहबते अख्यार की कमी के बाईस डी
 जमाना ईस्लाहे निख्यत बेहद दुश्वार और रियाकारी का ખतरा
 शदीद. **इर्ज कीजिये ! आप ने बिगैर पूछे किसी को बता दिया**
के “मैं ने द्रो उज किये हें.” इस पर अगर वोह पूछ बैठे के
जनाब ! मुजे बताने की ज़रूरत कैसे पेश आई ? अब अगर

આપ ને ઘબરા કર કહ દિયા કે તહ્દીસે ને'મત (અલ્લાહ ﷻ કી ને'મત કા ચરયા કરને) કે લિયે અર્ઝ કિયા હૈ. ઈસ પર હો સકતા હૈ કે સાઈલ ખામોશ હો જાએ, મગર ગૌર ફરમા લીજિયે ! કયા યેહ કહતે વક્ત, કે “મૈં ને દો હજ કિયે હૈં” વાકેઈ આપ કે દિલ મેં તહ્દીસે ને'મત યા'ની અલ્લાહ ﷻ કી ને'મત કા ચરયા કરને કી નિચ્ચત થી ? અગર થી ફિર તો ઠીક વરના ઝૂટ કે ગુનાહ કા વબાલ સર પર પડા ઓર “દિલ મેં કુછ ઝબાન પર કુછ” કી વજહ સે નિફાક ઓર બતાતે વક્ત અગર ﷻ દિલ મેં રિયા ઓર દિખાવે કા ઈરાદા થા તો રિયાકારાના અમલ કો તહ્દીસે ને'મત મેં ખપાને કી “રિયાકારી દર રિયાકારી” કા ઈલ્લામ મઝીદ બર આં. મદની ઈલ્તિજા હૈ કે ઝબાન પર કુફલે મદીના લગાને કી કોશિશ કીજિયે કે ઝબાન કી બ ઝાહિર મા'મૂલી નઝર આને વાલી લઝિશ ભી જહન્નમ મેં ઝોક સકતી હૈ !

દો હજ ઝાએઝ કર દિયે

મશ્હૂર મુહદિસ હઝરતે સય્યિદુના સુફ્યાન સૌરી رَضِيَ اللهُ عَنْهُ કહીં મદ્દુ યે મેઝબાન ને અપને ખાદિમ સે કહા : ઉન બરતનોં મેં ખાના ખિલાઓ જો મેં દૂસરી બાર કે હજ મેં લાયા હું, સય્યિદુના સુફ્યાન સૌરી رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ને સુન કર ફરમાયા : મિસ્કીન ! તૂને એક જુમ્લે મેં દો હજ ઝાએઝ કર દિયે !

(અહ્સનુલ વિઆઈ લિ આદાબિહુઆઅ, સ. 157)

અતા કર દે ઈખ્લાસ કી મુઝ કો ને'મત

ન નઝદીક આએ રિયા યા ઈલાહી

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 157)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

नेकियां छुपाओ

बे ज़रूरत अपने उज व उम्र की ता'दाद, तिलावत कर्दा कुरआने पाक और दुइदुदे पाक और दीगर अवराद पढने की गिनती बताने वालों के लिये लम्हअे झिझिया है. (छप्लास के मुतलाशी दा'वते छस्वामी के छशाअती छदारे मक्तबतुल मदीना का ज़री कर्दाबयान का ऑडियो केसिट "नेकियां छुपाओ" छसिल कर के सुनिये) बिना छजत अपने आप को छज्ज, कारी, छझिज कडने लिफने वाले भी गौर करे के वोड उज या इन्ने किराअत या छिइजे कुरआने पाक से मुशररफ़ डोने का ब बांगे दुडुल अे'लान कर के क्या लेना याड रहे हैं? छं, लोग अपनी मरजी से अैसों को छज्ज साडिब, कारी साडिब या छझिज साडिब कहे तो छस में कोछ मुजायका नहीं. अलबत्ता बुजुर्गों के उज की ता'दाद का मुआमला भी छसी तरड है के या तो छन के फुदाम ने छन को रिवायत किया डोगा या तडूदीसे ने'मत के लिये ब ज़बाने फुद छर्शाद इरमाया डोगा. सरापा छप्लास बन्दों का मन्शा डरगिज नेकनामी या अपनी पारसाछ का सिक्का जमाना नहीं डोता. यछं येड भी अर्ज करता यलूं के अगर कोछ छज्ज अपने उज वगैरा की ता'दाद बताअे भी तो डमें उसे रियाकार कडने की छज्जत नहीं क्यूंके डिलों का डाल रबबे जुल जलाल ज़ानता है, डम पर लाजिम है के डुस्ने ज़न से काम लें.

﴿77﴾ अेक बुजुर्ग का शैतान से मुकालमा

किसी बुजुर्ग ने उज के रोज अरफ़ात शरीफ़ के मैदान में शैतान को ब शकले छन्सान छस डाल में डेजा के वोड निडायत

मकामे ईब्राहीम

उजरे अम्बद

गारे सौर

गारे खिरा

जबले उकुद

मेहराबे नजवी

मिम्बरे रसूल

कमजोर व जर्द रू है, उस की पीठ टूटी हुई है और रो रहा है।
 बुजुर्ग के पूछने पर उस ने अपने रोने का सबब कुछ यूँ बताया
 के यूँके यहां अल्लाह ﷻ की रिजा के लिये छाज्ठ एकट्टे लुअे हैं,
 लिहाजा अल्लाह ﷻ एन को रुस्वा नहीं करेगा, मुजे येह उर
 है के कहीं सारे ही बपश न दिये जाअें ! अपनी कमजोरी का
 सबब उस ने राहे जुदा के मुसाफ़िरो के धोडों का हनहनाना
 बताया और बसद अइसोस कडा के अगर येह सुवार (या'नी
 राहे जुदा के मुसाफ़िर) मेरी पसन्द के (या'नी गइलतों और गुनाहों
 भरे) रास्तों पर छोते तो बहुत भूब था. जर्द रूई या'नी येहरा
 पीला पड जाने का सबब उस ने एबादत पर लोगों का अेक
 दूसरे की मदद करना करार दिया. उन बुजुर्ग ने जब येह पूछा
 के तेरी कमर क्यूं टूटी हुई है ? तो बोला : बन्दा जब अल्लाह
 ﷻ से दुआ करता है “ या अल्लाह ! मेरा आतिमा बिलभैर
 इरमा” तो मुजे सप्त सदमा छोता है और मेरी ज्वालिश छोती
 है के येह अपने नेक अमल को “कुछ” (या'नी बडा कारनामा)
 समजे, एस पर भूब एतराअे और इले ताके बरबाद हो, मुजे
 एस बात का भौइ आता है के कहीं एस को येह समज न आ
 जाअे के अपने अमल पर एतराना नहीं याहिये बल्के सिई व
 सिई अल्लाह ﷻ की रहमत पर नजर रभते लुअे आजिजी
 एप्तियार करनी याहिये. (احياء العلوم ۱ ص ۳۲۲ ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

﴿78﴾ बुलन्दी याहने वाले की रुस्वाइ

अेक बुजुर्ग ﷺ इरमाते हैं : मैं ने मक्कअे

मुकर्रमा كَادَاكَ اللهُ مُرْتَابًا وَتَعْظِيمًا में सफ़ा और मर्वह के दरमियान अेक भय्यर सुवार देषा, कुए गुलाम “उट जओ ! उट जओ !!” की आवाजें लगा कर उस के सामने से लोगों को उटा रहे थे. कुए अर्से बा'द मुजे वोडी शप्स बगदाद में लम्बे बाल, नंगे पाँउं और हसरत जहा नजर आया, में ने हैरत से पूछा : “अल्लाह क़ुर्क़ ने तेरे साथ क्या मुआमला इरमाया ?” जवाब दिया : में ने ऐसी जगह (या'नी मक्कअे पाक में) “बुलन्दी” (बडाई) याडी जहां लोग “आजिजी” करते हैं तो अल्लाह क़ुर्क़ ने मुजे ऐसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग बुलन्दी पाते हैं.

(الزواج عن اقتراف الكبار ج ۱ ص ۱۶۶)

वोडी सर भर सरें मडशर बुलन्दी पाअंगा जो सर

यहां दुन्या में ईन के आस्ताने पर जुका डोगा

(वसाईले बप्शिश, स. 187)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿79﴾ हज की ज्वाहिश थी मगर पत्ले जर न था

उजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज उजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज ने अेक बार अपने गुलाम मुजाहिम से इरमाया : मेरी उज की ज्वाहिश है, क्या तुम्हारे पास कुए रकम है ? अर्ज की दस दीनार से कुए जाईद हैं. इरमाया : ईतनी सी रकम में उज क्यूंकर डो सकता है ! कुए डी दिन गुजरे थे के मुजाहिम ने अर्ज की : या अमीरल मुअमिनीन ! तय्यारी कीजिये, डमें बनू मरवान के माल से 17 उजार दीनार (सोने की अशरइयां) मिल गअे हैं. इरमाया : ईन को बैतुल माल में जम्अ करवा दो,

अगर येह हलाल के हैं तो हम ब कदरे जरूरत ले युके हैं और अगर हराम के हैं तो हमें नहीं याहिएं. मुआहिम का बयान है के जब अभीरुल मुअमिनीन ने देखा के येह बात मुअ पर गिरां (ना गवार) गुजरी है तो इरमाया : देभो मुआहिम ! जो काम में अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये किया करूं उसे गिरां (बोज) न समजा करो, मेरा नफ्स तरक्की पसन्द और ખૂબ से ખૂબतर का मुश्ताक (तलब गार) है, जब त्नी एसे कोई मर्तबा मिला एस ने इौरन उस से बुलन्द तर मर्तबे के हुसूल की कोशिश शुइअ कर दी, हुन्यावी मनासिब (या'नी ओहदों) में से बुलन्द तर मन्सब (या'नी ओहदा) पिलाइत है जो मेरे नफ्स को हासिल हो युका है, अब येह सिर्फ और सिर्फ जन्नत का मुश्ताक है. (سيرت عمر بن عبدالعزيز لابن عبدالمکرم ص ۵۳) अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी बे हिसाब भगिइरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

आभिरि उम्र है क्या रौनके हुन्या देभूं

अब इकत अक ही धुन है के मदीना देभूं

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! एस हिकायत में उन लोगों के लिये दर्से एभ्रत है जो रिश्वत, सूद, जूअे, तिजारत में धोका और जूट जैसे ना जाईज जराअेअ से दौलत एकट्टी करते हैं और उसी में से उज कर के समजते हैं के हम ने बहुत बडी काम्याबी हासिल कर ली है. ખબરदार ! येह काम्याबी नहीं बल्के “योरी और सीना जोरी” वाला मुआमला है और एस का अन्जाम

बहुत बयानक है. उद्दीस शरीफ में है : जो माले हराम ले कर
 उज को जाता है जब लब्बैक कहता है, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस
 शप्स से एशदि इरमाता है : न तेरी लब्बैक कबूल, न बिदमत
 पजीर (या'नी मन्ज़ूर) और तेरा उज तेरे मुंछ पर मरदूद है,
 यहां तक के तू येह माले हराम, के तेरे कब्जे में है उस के मुस्ताहिकों
 को वापस दे.

(التذكرة فى الوعظ لابن جوزى ص ١٢٤)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿80﴾ हर दिल अजीज पलीफ़ा

मकबूलियत और हर दिल अजीजी भी अेक बहुत
 बडा अे'जाज है, हुस्ने अफ्लाक और अद्लो एन्साफ़ की बदौलत
 अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल
 अजीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز को येह हासिल था, युनान्चे आप
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى अेक बार उज को मौसिमे बहार में जब मैदाने
 अरफ़ात पहांचे तो लोगों की तवज्जोह का मर्कज़ बन गअे.
 उजरते सय्यिदुना सुहेल बिन अभी सालेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى भी
 उस हुजूम में मौजूद थे, एन्हों ने अपने वालिदे मोहतरम से
 अर्ज की : वल्लाह ! मेरे ખयाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उमर बिन
 अब्दुल अजीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز से महब्बत इरमाता है, वालिद
 साहिब ने इस की दलील पूछी तो कहा : लोगों के दिलों में एन
 की ખूब एज्जत है. इर येह उद्दीसे पाक बयान की के इरमाने
मुस्ताफ़ा है : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से
 महब्बत करता है तो जिब्रैल (عَلَيْهِ السَّلَام) से इरमाता है के मैं कुलां से
 महब्बत करता हूं तुम भी उस से महब्बत करो युनान्चे (उजरते)

जिब्रिील (عَلَيْهِ السَّلَام) उस से मलुम्बत करते हैं, फिर आस्मान वालों में निदा देते (या'नी अे'लान करते) हैं के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुलां से मलुम्बत रपता है तुम लोग भी उस से मलुम्बत करो, युना'चे आस्मान वाले उस से मलुम्बत करने लगते हैं, इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को दुन्या में मकबूले आम बना देता है. (تاریخ دمشق ج ٤٠ ص ١٤٠) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सढके हमारी बे हिसाब भङ्कित हो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ
 वोड, के इस दर का हुवा पढके पुदा उस की हुई

वोड, के इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

(हदाईके बज्शिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿81﴾ बुरकअ पोश आ'राबिय्या

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 397 सङ्घात पर मुश्तमिल किताब, "पर्टे के बारे में सुवाल जवाब" सङ्घा 339 ता 341 पर है : हजरते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَفَّار मुत्तकी व परहेज गार, बेहद खूबरू और हसीन नौ जवान थे. सङ्घरे हज के दौरान मकामे अब्बाअ पर अेक बार अपने जैमे (CAMP) में तन्हा तशरीफ़ इरमा थे. आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का रङ्किके सङ्घर पाने का इन्तिजाम करने के लिये गया हुवा था. नागाह अेक बुरकअ पोश आ'राबिय्या (या'नी अरब की ढीछाती औरत) जैमे में दाभिल हुई और उस ने येहरे से निकाल उठा दिया ! उस का हुस्न बहुत जियादा इतना भरपा कर रहा था ! कहने लगी :

मुझे “कुछ” दीजिये. आप ﷺ समझे शायद रोटी मांग रही है. कड़ने लगी : मैं वोड़ याहती हूँ जो बीवी अपने शोहरत से याहती है. आप ﷺ ने षौक़े भुदा से लरउते हुअे इरमाया : “तुझे मेरे पास शैतान ने त्मेजा है.” एतना इरमाने के बा'द अपना सरे मुबारक घुटनों में रभ कर भ आवाजे बुलन्द रोने लगे. येह मन्जर देभ कर भुरकअ पोश आ'राबिया घबरा कर तेज तेज कदम उठाअे जैमे से बाहर निकल गई. जब रङ्गीक (साथी) आया और देभा के रो रो कर आप ﷺ ने आंभें सुजा दीं और गला बिठा दिया है, तो उस ने सबभे गिर्या (या'नी रोने का सबभ) दरयाइत किया, आप ﷺ ने अक्वलन टालम टोल से काम लिया मगर उस के पैहम ईसरार पर हकीकत का एजहार कर दिया तो वोड़ त्नी इट इट कर रोने लगा. इरमाया : तुम क्यूं रोते हो ? अर्ज की : मुझे तो जियादा रोना याहिये क्यूंके अगर आप की जगह में होता तो शायद सभ्र न कर सकता (या'नी हो सकता है गुनाह में पड जाता). दोनों हजरत ﷺ रोते रहे यहां तक के मक्कअे मुकर्रमा ﷺ में हाजिर हो गअे. तवाइ व सई वगैरा से इरिग होने के बा'द हजरते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार ﷺ उजरे अस्वद के पास तशरीफ लाअे और यादर से घुटनों के गिई घेरा बांध कर बैठ गअे. एतने में गींध आ गई और आलमे ज्वाब में पछोंय गअे, अेक हुस्नो जमाल के पैकर, मुअत्तर मुअत्तर भुश लिबास, दराज कद भुजुर्ग नजर आअे, हजरते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार ﷺ ने पूछा : आप कौन हैं ? जवाब दिया : मैं

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नबी) यूसुफ़ हूँ. अर्ज की : या नबिय्यल्लाह !
 सुलैमा के साथ आप का वाकिआ अज्जब
 है. इरमाया : मकामे अब्वाअ पर आ'राबिय्या के साथ डोने
 वाला आप का वाकिआ अज्जब तर (या'नी जियादा अज्जब) है.
 (اَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ۳ ص ۱۳۰ مُلَخَّصًا) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रडमत
 डो और उन के सदके डमारी बे डिसाब मग्दिरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

देभा आप ने ! हज के मुबारक सफ़र में शैतान किस
 तरड डजियों को गुनाडों में इंसाने की तरकीबें करता है मगर
 कुरबान ज़ाईये आशिकाने रसूल के पाकीजा किरदार पर, के
 शैतान के डर वार को नाकाम बनाते यले जाते हैं जैसा के डउरते
 सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْعَفَّار ने षुद यल कर
 आने वाली बुरकअ पोश आ'राबिय्या को हुकरा दिया बल्के
 भौंके षुदा से रोना धोना मया दिया, जिस के नतीजे में डउरते
 सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْعَفَّار ने प्वाअ में तशरीफ़ ला
 कर आप عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की डौसला अफ़्जाई इरमाई. डडर
 डाल दुन्या व आभिरत की त्बलाई ईसी में है के जिन्से मुषालिफ़
 (या'नी मई का औरत और औरत का मई) लाभ डिल लुभाअे
 और गुनाड पर उकसाअे मगर ईन्सान को याडिये के डरगिज
 शैतान के डामे तजवीर (या'नी धोके) में न आअे, डर सूरत में
 उस के युंगल से षुद को बयाअे और षूअ अजरो सवाअ कमाअे.

आभिरी उअ्र डे क्या रौनके दुन्या डेभूं

अअ इकत अक डी धुन डे के मडीना डेभूं

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

82) ब कसरत रोने वाला हाज

हजरते सय्यिदुना मुअव्वल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَىٰ कसरते हैं :

हजरते सय्यिदुना बुहैम एजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ने मुज से कसरमाया : मेरा हज का एरादा है किसी को मेरा रफ़ीके सफ़र बना दीजिये. युनान्चे मैं ने अपने अक पडोसी को उन के साथ सफ़रे मदीना पर आमादा कर लिया. दूसरे दिन मेरा पडोसी मेरे पास आया और कहने लगा : मैं हजरते सय्यिदुना बुहैम के साथ नहीं जा सकता. मैं ने हैरत से कहा : फुदा की कसम ! मैं ने कूफ़ा बर में एन जैसा बा अप्लाक आदमी नहीं देखा आबिर क्या वजह है के तुम एन की रफ़ाकत से फुद को महरम कर रहे हो ? वोह बोला : मैं ने सुना है के वोह अकसर रोते रहते हैं, एस लिये उन के साथ मेरा सफ़र फुश गवार नहीं रहेगा. मैं ने उस को समजाया के येह बहुत अच्छे बुजुर्ग हैं, एन की सोहबत तुम्हारे लिये निहायत मन्फ़अत बफ़्श होगी. वोह मान गया. जब सफ़र के लिये ओंटों पर सामान लादा जाने लगा तो हजरते सय्यिदुना बुहैम एजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي अक दीवार के करीब बैठ कर रोने में मशगूल हो गये, हत्ता के आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَىٰ की दाढी मुबारक और सीना अशकों से तर हो गया और आंसू जमीन पर टप टप गिरने लगे. मेरे पडोसी ने धबरा कर मुज से कहा : अत्नी तो सफ़र की शुइआत है और एन का येह हाल है फुदा जाने आगे क्या आलम होगा ! मैं ने एन्फ़िरादी कोशिश करते हुअे कहा : धबराएये नहीं सफ़र का

मकामे ईब्राहीम

उजरे अम्बद

गारे सौर

गारे खिरा

जबले उहुद

मेहराबे नजवी

मिम्बारे रसूल

मुआमला है, हो सकता है बाल बच्चों की जुदाई में रो रहे हों और आगे चल कर करार आ जाये. उजरते सय्यिदुना बुहैम ईजली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने यह बात सुन ली और इरमाया : **वल्वाह !** ऐसी बात नहीं, इस सफ़र के सबभ मुजे “सफ़रे आभिरत” याद आ गया. यह इरमाते ही यीधे मार मार कर रोने लगे. पडोसी ने फिर परेशानी के आलम में मुज से कहा : मैंं एन के हमराह कैसे रह सकूंगा ! हां एन का सफ़र उजरते सय्यिदुना दावूद ताई और सय्यिदुना सलाम अबुल अह्वस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ होना याहिये क्यूंके यह हर दो उजरत भी बहुत रोते हैं, उन के साथ एन की तरकीब भूब रहेगी और मिल कर भूब रोया करेंगे. मैंं ने फिर पडोसी की हिम्मत बंधाई, आभिरे कार वोह उन के साथ सफ़रे मदीना पर रवाना हो गया. उजरते सय्यिदुना मुभव्वल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : जब उज से उन की वापसी हुई तो मैंं अपने पडोसी हाज्ज के पास गया, उस ने बताया : **अव्वाह** كَلِّمْكُمْ आप को जजाये भैर दे, मैंं ने एन जैसा आदमी कहीं नहीं देखा, हावांके मैंं मालदार था फिर भी गरीब होने के बा वुजूद वोह मुज पर भूब भर्य करते थे, बूढे होने के बा वुजूद रोजे रफते, मुज बे रोजा जवान के लिये जाना बनाते और मेरी बेहद फिदमत किया करते थे. मैंं ने कहा : आप तो उन के रोने के सबभ परेशान होते थे अब क्या जेहून है ? कहा : पहले पहल मैंं बढे दीगर काङ्किले वाले भी उन के रोने की कसरत से घबरा जाते थे

मस्जिदे भैक

मस्जिदे जिन्

मस्जिदे जिहराना

मस्जिदे निम्बद

मस्जिदे गामा

मस्जिदे जुमुआ

मस्जिदे शैभेन

मकामे 'धब्रालीम

उजरे अम्बद

गारे सौर

गारे खिरा

जबले उकुद

मेहराबे नजवी

मिम्बरे रसूल

मगर आहिस्ता आहिस्ता उन की सोडभत की बरकत से हम पर भी रिक्तत तारी होने लगी और उन के साथ हम सब भी मिल कर रोते थे. उजरते सय्यिदुना मुभव्वल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى कहते हैं : 'ईस के बा'द में उजरत सय्यिदुना बुहैम 'धजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की भिदमत में हाजिर हुवा और अपने पडोसी हाज्ज के बारे में दरयाफ्त किया तो इरमाया : बहुत अरख्ग रफीक (साथी) था, जिहुल्लाह और कुरआने करीम की तिलावत की कसरत करता था और उस के आंसू बहुत जल्द बह जाया करते थे. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम को जजाअे भैर अता इरमाअे. (البحر العميق ج ١ ص ٣٠٠ مُلَخَّصًا) अल्लाह की उन पर रडमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मगिइरत हो.

'اميين بجاا النبي الاميين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

याहे नबिय्ये पाक में रोअे जे उम्र भर

मौला मुजे तलाश उसी यश्मे तर की हे

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

«83» हाजियों की हैरत अंगेज भैर प्वाही

मशहूर ताबे'ध बुजुर्ग उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह 'धबने मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने उज का 'धरादा किया तो क'ध आशिकाने रसूल साथ यलने के लिये तय्यार हो गअे, आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने सब से अपराजात ले कर अेक सन्डूक में डाल कर मडफूज कर लिये, इर अपने पल्ले से सब के लिये सुवारियां किराअे पर लीं

और काङ्किला सूअे उरम रवां दवां डो गया. आप ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ڪَافِئِلے वालों को अपनी जेबे पास से उम्ढा से उम्ढा ढाना ढिलाले रहे. जब येड काङ्किला बगदाद शरीफ़ ढलोंया तो आप ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने सब के लिये बेडतरिन लिबास और ढाने ढीने का कसीर सामान ढरीदा. काङ्किला मन्जिलें तै करता हुवा ढिल आढिर मदीनतुल मुनव्वरड ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ڪَافِئِلے डो डया. आप ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने अपने उर उर रडीक को मदीनतुल मुनव्वरड ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से उन के घर वालों की इरमाईश के मुताढिक यीजें ढरीद कर ढनायत इरमाई. ढस के बा'द काङ्किला मक्कअे मुअज़्ज़मा ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ڪَافِئِلے की पुरनूर इजाओं में दाढिल हुवा और मनासिके उज अदा किये. उज के बा'द यडं से ढी अपने ढल्ले से सब को तढरुकात वगैरा ढरीद कर दिये. वाढसी में ढी रास्ते ढर आशिकाने रसूल ढर दिल् ढोल कर ढर्य किये. जब काङ्किला अपने वतन ढलोंय गया तो आप ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने उन के घरों ढर उस्बे उरुरत ढलस्तर वगैरा करवा कर यूना करवा दिये. तीन दिन बा'द अपने काङ्किले के तमाम डलजियों की दा'वत की और बतौरे सौगात उनडें बेडतरिन मल्बूसात अता किये, जब सब ढाना ढा युके तो आप ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने सन्डूक मंगवा कर ढोला और उर अेक डलज की रकम जूँ की तूं वाढस कर दी. (عُيُونُ الْحَكَايَاتِ ص २०६ مَلَخَصًا). अदलाड ڪُحَّةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की उन ढर रहमत डो और उन के सडके डमारी बे डिसाढ मङ्किरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

धारे यलते हें अता के वोड हें कतरा तेरा
तारे भिलते हें सभा के वोड हें जरा तेरा

(हदाईके अफिशिश शरीफ)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

﴿84﴾ **एमाम शाईफ की सङ्गे हरम में सभावत**

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो! देखा आप ने! **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ**

हमारे औलियाअे किराम **رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام** की सभावत बे मिसल थी, और कयूं न हो, अद्लाह उ **عَزَّوَجَلَّ** के उभीअ **وَالِهٖ وَسَلَّمَ** का इरमाने अजीमुशान है : अद्लाह तआला ने अपने इर वली को अखे अज्लाक और सभावत की इतरत ईनायत इरमाई है।

(**تاريخ مدينة دمشق ج ٥ ص ٤٧٢**) मन्कूल है, सय्यिदुना एमाम शाईफ **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي** जब (यमन के शहर) सन्आ से मक्काअे मुकर्रमा की तरफ आअे तो आप के पास इस उजार इराइम थे, मक्के शरीफ के आहर भैमा लगाया और याइर बिछा कर सारी रकम उस पर उल दी, जे त्नी आता उसे मुट्टी भर कर अता इरमा देते, जब जोइर की नमाज पढी तो वोड याइर जाउ दी, उस पर अेक इरलम त्नी आकी न भया था।

(**احياء العلوم ج ٣ ص ٣١٠ ملخصاً**)

डाथ उडा कर अेक टुकडा अै करीम !

हें सभा के माल में उकदार डम

(हदाईके अफिशिश)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

﴿85﴾ मैं क्यूं न रोऊं ?

उत्तरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बाकिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَادِر تَشْرِيْفُ لِه
 जब उज के लिये मक्कअे मुकर्रमा كَذَلِكَ اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا ले
 गअे और मस्जिदुल हुराम में दाखिल हुअे तो बैतुल्लाह शरीफ
 को देखा तो रोने लगे उता के रोने में आप की आवाज बुलन्द
 हो गई किसी ने अर्ज की : या सय्यिदी ! सब लोगों की नजरें
 आप की तरफ लगे गई हैं, ईस कहर जोर से गिर्या व जारी न
 इरमाईये. इरमाया : “क्यूं न रोऊं ! शायद अल्लाह तआला
 मेरे रोने के सबल मुज पर रहमत की नजर इरमा दे और मैं
 बरोजे क्रियामत उस की बारगाह में काम्याब हो जाऊं.” इर
 आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने तवाफ़ किया और “मकामे ईब्राहीम”
 पर नमाज पढी जब सजदे से सर उठाया तो सजदे की जगह
 आंसूओं से तर थी. (رَوْضُ الرَّيْلِحِينَ ص 113) अल्लाह عزوجل की
 उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी बे हिसाब मग़ि़रत हो.

أُمِّيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِيْنَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अरे जाईरे मदीना ! तू फुशी से डंस रहा है

दिले गमजदा जो पाता तो कुछ और बात होती

(वसाईले बफ़िश, स. 308)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿86﴾ लफ्फेक कहते ही बेहोश हो गअे

उत्तरते सय्यिदुना ईमाम जैनुल आबिदीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
 ने जब अज्मे उजजे बैतुल्लाह किया और अहराम बांधा तो

ચેહરએ મુબારકા ઝદ્દ હો ગયા ઓર લબ્બૈક ન કહ સકે. લોગોં ને અઝ્ઝ કી : આપ લબ્બૈક નહીં પઢતે ? ફરમાયા : મુઝે ડર હૈ કહીં જવાબ મેં “લા લબ્બૈક” ન કહ દિયા જાએ ! અઝ્ઝ કી ગઈ : એહરામ બાંધ કર લબ્બૈક કહના ઝરૂરી હૈ. આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ને લબ્બૈક પઢી તો બેહોશ હો કર સુવારી પર સે ગિર પડે ઓર ઇખ્તિતામે હજ તક યેહી સૂરત રહી કે જબ ભી લબ્બૈક કહતે બેહોશ હો જાતે. (تهذيب التهذيب ج ٥ ص ٦٧٠) અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી ઉન પર રહમત હો ઓર ઉન કે સદકે હમારી બે હિસાબ મઝિફરત હો.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ઉગ્લિયાં કાનોં મેં દે દે કે સુના કરતે હેં

ખલવતે દિલ મેં અજબ શોર હેં બરપા તેરા

(ઝોકે ના'ત)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿87﴾ અપાહજ હાજી

હઝરતે સચ્ચિદ્દના શકીક બલખી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَرِيَّ ફરમાતે હેં કે મેં ને મક્કએ મુકર્રમા رَادَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا કે રાસ્તે મેં એક અપાહજ હાજી કો દેખા જો ઘિસટ કર ચલ રહા થા, મેં ને ઉસ સે પૂછા : તુમ કહાં સે આએ હો ? કહને લગા સમર કન્દ સે. મેં ને ફિર પૂછા : કિતના અર્સા હુવા વહાં સે ચલે હુએ ? જવાબ દિયા : દસ બરસ સે ઝિયાદા હો ગએ હેં. મેં બડે તઅજજુબ સે ઉસ કો દેખને લગા, ઇસ પર વોહ બોલા : ઐ શકીક (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) ! કયા દેખ રહે હો ? મેં ને કહા : તુમહારી કમઝોરી ઓર સફર કી દરાઝી ને મુઝે મુતઅજિજબ કર દિયા.

कहने लगा : ओ शकीक ! सफ़र की दूरी को मेरा शौक (या'नी ईश्क) करीब कर देगा और मेरी कमजोरी का सहारा मेरा मौला **عَزَّوَجَلَّ** है. ओ शकीक ! तुम अेक जईफ़ (या'नी कमजोर) बन्दे पर तअज्जुब कर रहे हो ! ईस को तो ईस का मालिक **عَزَّوَجَلَّ** यला रहा है.

ना तुवानी का अलम हम जुअफ़ा को क्या हो !

हाथ पकड़ें लुअे मौला की तुवानी हें

(जौके ना'त)

इर उस ने दो अरबी अश्आर पढे जिन का तरजमा येह है :

(1)..... ओ मेरे आका **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं तेरी जियारत को आ रहा हूं और ईश्क की मन्जिलें कठिन हैं, लेकिन शौक (ईश्क) उस शप्स की मदद किया करता है जिस की माल मदद नहीं करता. (2)..... वोह हरगिज आशिक नहीं जिस को रास्ते की उलाकत का पौफ़ हो और न ही वोह आशिक है जिस को रास्तों की सप्ली ने यलने से रोक दिया.

(رَوْضُ الرَّيَّاحِينِ ص 120) अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब भगिफ़रत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हम को तो अपने साथे में आराम ही से लाये

हीले बहाने वालों को येह राह उर की हें

(हदाईके बफ़िश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿88﴾ एडे कुरबान में जान कुरबान कर दी

उजरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّارِ** कुरमाते हें के मैं अेक काईले के हमराह उज्जे बैतुद्लाह शरीफ़ के

मकामे ईब्राहीम

हजरे अम्बद

गारे सौर

गारे हिरा

जबले उकुद

मेहराबे नाबवी

मिम्बरे रसूल

लिये जा रहा था, रास्ते में अक नौ जवान हाथ देखा जो बिगैर जादे राह पैदल चल रहा था. मैं ने उस को सलाम किया, उस ने सलाम का जवाब दिया. मैं ने पूछा : औ नौ जवान ! कहां से आये हो ? उस ने जवाब दिया : उसी (या'नी अल्लाह ﷻ) के पास से. पूछा : कहां जा रहे हो ? कहा : उसी (या'नी अल्लाह ﷻ) के पास. पूछा : जादे राह (या'नी सामाने सफ़र) कहां है ? बोला : उसी (या'नी अल्लाह ﷻ) के जिम्मे करम पर है. मैं ने कहा : येह तवील रास्ता बिगैर तोशे (या'नी जाने पीने) के तै नही होगा, तेरे पास कुछ है भी ? बोला : कुछ हां, मैं ने घर से निकलते वक्त पांच हुड़ूफ़ जादे राह के तौर पर ले लिये थे. पूछा : वोह पांच हुड़ूफ़ कौन से हैं ? उस ने कहा : अल्लाह ﷻ का येह फ़रमान : **كَهَيِّصَ**. पूछा : एन हुड़ूफ़ से क्या मुराद है ? कहा : काफ़ से “काफ़ी” या'नी किफ़ायत करने वाला, हा से “हादी” या'नी हिदायत करने वाला, या से पनाह देने वाला, औन से “आलिम” या'नी जानने वाला, साँद से “सादिक” या'नी सय्या, तो जिस का रफ़ीक काफ़ी व हादी व मुअव्वी (या'नी पनाह देने वाला) व आलिम और सादिक हो वोह कैसे जाअेअ या परेशान हो सकता है और उसे क्या अज़रत है के जादे राह और पानी उठाये फ़िरे ! हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार **رَضِيَ اللهُ عَنْهُ** फ़रमाते हैं के उस हाथ का कलाम सुन कर मैं ने उस को अपनी कमीस पेश की. उस ने कबूल करने से एन्कार करते हुअे कहा : “औ शौष ! दुन्या की कमीस से भरलूना रहना बेहतर है क्यूंके दुन्या की हलाल चीजों पर हिसाब और हराम चीजों पर अजाब है.” जब रात

मस्जिदे पैक

मस्जिदे जिन्न

मस्जिदे जिहराना

मस्जिदे निम्बल

मस्जिदे गामामा

मस्जिदे ज़ुमुआ

मस्जिदे शौबान

का अंधेरा छा गया तो उस डाञ्च ने मुंह आस्मान की तरफ उठाया और इस तरह “मुनाजात” करने लगा : “अै वोह पाक जात ! जिस को बन्दों की ईताअत से पुरशी होती है और बन्दों के गुनाहों से कुछ नुकसान नहीं होता, मुझे वोह खीज या'नी ईबादत अता इरमा जिस से तुझे पुरशी होती है और वोह खीज या'नी गुनाह मुआइ इरमा दे जिस से तेरा कोई नुकसान नहीं.” जब लोगों ने अेहराम बांध कर “लब्बैक” कही तो वोह पामोश था, मैं ने पूछा : तुम लब्बैक क्यूं नहीं कहते ? उस ने कहा : मुझे डर है के मैं कहूं : लब्बैक और वोह इरमा दे : “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ” या'नी न तेरी लब्बैक कबूल है और न सा'दैक और न मैं तेरा कलाम सुनूं और न तेरी तरफ देखूं. फिर वोह खला गया मैं ने उस डाञ्च को सारे रास्ते में फिर कहीं न देखा, बिल आपिर मिना शरीफ में वोह नजर आ गया उस वक्त वोह कुछ अरबी अशआर पढ रहा था जिन का तरजमा येह है : (1)..... बेशक वोह हबीब (या'नी प्यारा) जिस को मेरा पून अहना पसन्दीदा है तो मेरा पून उस के लिये हलाल है हरम में ली और हरम के बाहर ली (2)..... पुदा كَلِّفْ كَلِّفْ كَلِّفْ की कसम ! अगर मेरी इह को ईल्म हो जाअे के वोह किस जाते अकदस से महब्बत करती है तो वोह कदम के अजाअे सर के बल पडी हो जाअे (3)..... अै मलामत करने वाले ! उस के ईशक पर मुझे मलामत न कर, के अगर तुझे वोह नजर आ जाअे जो मैं देખता हूं तो तू कभी ली मुझे मलामत न करे (4)..... लोगों ने ईद के दिन लेउ, अकरियों और ठिठों की कुरबानी की और महबूब ने इस दिन मेरी जान की कुरबानी की (5)..... लोगों का लज हुवा है और

मेरा हज मेरे महबूब के पास जाना है. लोगों ने कुरबानियां उदिय्या की और मैं ने अपनी जान और अपने पून की कुरबानी का तोहफा पेश किया.

अश्आर पढने के बा'द वोह गिडगिडा कर अर्ज गुजार हुवा : “**أَيُّهَا الَّذِي فِي يَدَيْكَ الْمَقْدُورَ !** लोगों ने कुरबानियां की और तेरा कुर्ब हासिल किया और मेरे पास तो कुछ भी नहीं जिस के साथ तेरा कुर्ब (या'नी नजदीकी) हासिल कर सकूं सिवाये अपनी जान के, तो इसी को तेरी बारगाह में नज़र करता हूं तू इसे कबूल इरमा.” येह कहने बा'द उस हाज ने अेक यीअ मारी, जमीन पर गिरा और उस की इह कइसे उन्सुरी से परवाज कर गइ. हजरते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار** इरमाते हें : इर यकायक गैब से अेक आवाज गुंज उठी : “**येह अल्लाह ज़ुंज का प्यारा है जो इसके इलाही की तलवार से कत्ल हुवा है.**” इर मैं ने उस पुश नसीब हाज की तजहीजो तकईन की. (११ **رَوْحُ الْيَاسِينِ ص**) अल्लाह **جَزَلُ** की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी बे हिसाब भगिइरत हो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

क्या नज़र करूं प्यारे ! शै कोन सी मेरी है

येह इह भी तेरी है, येह जान भी तेरी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿89﴾ पुर असरार हाज

हजरते सय्यिदुना बिशर हाई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** इरमाते हें : मैं ने मैदाने अरइात में अेक हाज साडिब को देया जो के रो

रो कर अरबी में येह अश्आर पढ रहे थे. तरजमा : (1).....
 वोह जात हर औब से पाक है, अगर हम अपनी आंभों से कांटों और
 गर्म सूँठियों पर ली उस को सजदा करें तो फिर ली उस की ने'मतों के
 हक का दसवां हिस्सा बढे दसवें का ली दसवां नहीं नहीं बढे उस का
 ली दसवां हिस्सा अदा न हो (2)..... औ पाक जात ! मैं ने कितनी
 मर्तबा लज्जिशें (या'नी ખતાઓ) की और कभी ली अपनी ना इरमानियों
 में तुजे याद न किया मगर औ मेरे मालिक ﷻ ! तू हमेशा मुजे दर
 पर्दा याद इरमाता रहा (3)..... मैं ने न जाने कितनी ही मर्तबा
 गुनाहों के वक्त जहालत से अपना पर्दा फाश किया मगर तू ने हमेशा
 मुज पर लुत्की करम ही किया और अपने हिल्म के साथ मेरी पर्दा
 पोशी इरमाई.

उजरते सय्यिदुना बिशर हाफी عليه رحمة الله الكافي इरमाते
 हें : फिर वोह मेरी नजरों से गाईब हो गये. मैं ने हाजियों
 से पूछा के येह हाज साहिब कौन थे ? तो किसी ने बताया के
 येह उजरते अबू उबैद ખવાસ عليه رحمة الله تعالى थे. उन के
 "ખવાસ" (या'नी ખૂબियों) में से अेक येह ली है के उनहों ने
 सत्तर बरस तक षौके पुदा के सभब आस्मान की तरफ मुंड नहीं
 उठाया. (ایضاً ص ۹۸) अद्लाह ﷻ की उन पर रहमत हो और उन
 के सहके हमारी बे हिसाब भगिरत हो.

اٰميين بجاہ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बे नवा, मुफ्विसो मोहताजे गदा कौन ? "उे मैं"

साहिबे खूदो करम वस्फ हें किस का ? "तेरा"

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

دुन्या के लिये माल जम्मा करने वाले ने अकल हैं

इरमाने मुस्ताफ़ा : صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :
दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर
न हो और उस का माल है जिस का
कोई माल न हो और उस के लिये
बोह जम्मा करता है जिस में अकल
न हो.

(مشکوٰۃ المصابیح، ۲/ ۲۱۰، ج ۱، ص ۲۱۱)